

## वर्कर्स की वण्डरफुल सर्कस

मास्टर सर्वशक्तिमान बने हो? यह जो ग्रुप अधरकुमारों का है यह सभी मास्टर सर्वशक्तिमान बने हुए हैं या बनने के लिये आए हैं? जो समझते हैं बनने के लिए आये हैं वह हाथ उठाये। बाकी जो बने हुए हैं वह सामने आये। जब मास्टर सर्वशक्तिमान हैं तो पास ही पास हैं। कभी फेल नहीं होते। कभी भी किस बात में फेल नहीं होते। अच्छा भला कब फीलिंग आती है? निमित्त बनी हुई टीचर्स से सर्टिफिकेट मिला है कि फीलिंग प्रूफ है? वर्तमान समय के अनुसार यह बातें कोई मामूली नहीं हैं। वर्तमान पुरुषार्थ के प्रमाण मामूली बात भी महान गिनी जाती है। समझा जैसे जितना बड़ा आदमी, जितना अधिक धनवान होता है, उतना छोटा सा बुरा कर्म वा गलती का छोटा सा एक पैसे का दण्ड भी उसके लिये बहुत बड़ा होता है। तो इस रीति वर्तमान समय मामूली भी महान की लिस्ट में गिना जाता है। मास्टर सर्वशक्तिमान अर्थात् फीलिंग से परे। सभी बातों में फुल। नॉलेजफुल। सभी शब्दों के पिछाड़ी में फुल आता है। तो जितना फुल बनते जायेंगे उतना फीलिंग का फ्लो वा फ्लु यह खत्म हो जायेगा। फ्लोलेस को फुल कहा जाता है। सभी मास्टर सर्वशक्तिमान हो? जिन्होंने हाथ नहीं उठाया है वे भी मास्टर सर्वशक्तिमान हैं क्योंकि सर्वशक्तिमान बाप को अपना बना लिया है। सर्वशक्तिमान बाप को सर्व सम्बन्ध से अपना बनाया है, यही मास्टर सर्वशक्तिमान की शक्ति है। तो सर्वशक्तिमान को सर्व सम्बन्ध से अपना बनाया है? जब इतना बड़े से बड़ा प्रत्यक्ष प्रमाण है फिर क्यों नहीं अपने को जानते और मानते हो। यह प्रत्यक्ष प्रमाण सदैव सामने रहे तो मायाजीत बहुत सरल रीति बन सकते हो। समझा। जब सर्व सम्बन्ध एक के साथ जुट गये तो और बात रही ही क्या? जब कुछ रहता ही नहीं तो बुद्धि जायेगी कहाँ। अगर बुद्धि इधर-उधर जाती है तो सिद्ध होता है कि सर्व सम्बन्ध एक के साथ नहीं जोड़े हैं। जोड़ने की निशानी है अनेकों से टूट जाना। कोई ठिकाना ही नहीं तो बुद्धि कहाँ जायेगी। और सभी ठिकाने टूट जाते हैं। एक से जुट जाता है। फिर यह जो कम्पलेन है कि बुद्धि यहाँ, वहाँ दौड़ती है वह बन्द हो जायेगी। अच्छा।

यह जो ग्रुप समझते हैं हम भट्टी में आये हैं जबकि भट्टी में हैं ही फिर विशेष रूप से क्यों आये हो? या कहो भट्टी में तो हैं लेकिन बैटरी कहाँ तक चार्ज हुई है वह वेरीफाय या चैकिंग कराने आये हैं। चार्ज कराने आये हो वा चैकिंग कराने आये हो? (दोनों) है तो सभी वैल्यूबल, सर्विसबुल वर्कर्स ग्रुप। इस ग्रुप का टाइटिल तो सुन लिया ना। यह टाइटिल सुनकर सभी खुश हो रहे हैं। परन्तु इसमें लेकिन भी है। यह लक्ष्य भी है। यह लक्ष्य से बताते हैं कि आगे के लिए भट्टी से समान बनकर जायेंगे। है वर्कर्सग्रुप, लेकिन वर्कर्स के बदले कभी-कभी क्या करते हो, मालूम है? बापदादा वतन से वर्कर्स का एक्शन देखते हैं, जो यह करते हैं। कभी-कभी बहुत विचित्र सर्कस करते हैं। जैसे सर्कस में भिन्न-भिन्न एक्ट दिखाते हैं ना, वैसे

यह भी अपनी-अपनी सर्कस दिखाते हैं। उस सर्कस में क्या-क्या पार्ट बजाते हैं वह देखने योग्य होता है। कभी-कभी वर्कर्स अपना विकराल रूप भी दिखा देते हैं। अपनी कमियों पर विकराल रूप धारण करने के बजाए अन्य पर विकराल रूप की सर्कस दिखाते हैं। चाहे व्यवहार में, चाहे परिवार में, चाहे परमार्थ में तीनों में यह विकराल रूप की सर्कस दिखाते हैं। कभी-कभी फिर दूसरी सर्कस व्यर्थ संकल्प के झूले में झूलने की दिखाते हैं। वास्तव में झूला झूलना है अतीन्द्रिय सुख का लेकिन झूलते हैं व्यर्थ संकल्पों का। तीसरी सर्कस कौन-सी दिखाते हैं? स्थिति बदली करने की सर्कस दिखाते हैं। रूप और स्थिति बदलने का पार्ट मैजिकरिटी दिखाते हैं। तो वतन में बैठकर बापदादा वर्कर्स ग्रुप की यह सर्कस देखते हैं। पुरुषार्थी बहुत अच्छे हैं लेकिन पुरुषार्थ करते-करते कहाँ-कहाँ पुरुषार्थ अच्छा करने के बाद प्रालब्ध यहाँ ही भोगने की इच्छा रखते हैं। तो इच्छा भी है, अच्छा भी है। लेकिन प्रालब्ध जमा करनी है। लेकिन कहाँ-कहाँ अपने पुरुषार्थ की प्रालब्ध को यहाँ भोगने की इच्छा से जमा होने में कमी कर देते हैं। समझा। तो इस बात को खत्म करके जाना है। प्रालब्ध की इच्छा को खत्म कर सिर्फ अच्छा पुरुषार्थ करो। इच्छा के बजाए अच्छा शब्द याद रखना। समझा। इच्छा स्वच्छता को खत्म कर देती है और स्वच्छता के बजाय सोचता बन जाते हैं। यह है वर्तमान रिजल्ट। वर्कर्स का अर्थ है - करने वाला न कि सोचने वाला।

बापदादा जानते हैं यह उम्मीदवार रत्नों का ग्रुप है। उम्मीदवार भी हो, हिम्मतवान भी हो सिर्फ एक बात एड करनी है - सहनशक्तिवान बनना है। फिर उम्मीदवार से सफलता मूर्त बन जायेंगे। समझा। अभी उम्मीदवार मूर्त हो यह एक बात एड करने से सफलता मूर्त बन जायेंगे। सम्पूर्णता के समीपता की निशानी है सफलता। जितना-जितना अपने को सफलता मूर्त देखते जाओ उतना समझो सम्पूर्णता के नजदीक हैं। यह ग्रुप सफलता मूर्त बनने के लिए कौन सा स्लोगन सामने रखेंगे? प्यूरिटी ही संगमयुग की प्रासपेरिटी है - यह है स्लोगन। प्यूरिटी का कितना विस्तार है! प्यूरिटी कौन सी और किस युक्तियों से धारण कर सकते हो, इन टॉपिक्स पर टीचर्स क्लास करायेंगी। बापदादा सिर्फ टॉपिक दे रहे हैं। प्यूरिटी के विस्तार को समझना है। सम्पूर्ण प्यूरिटी किसको कहा जाता है? तो प्यूरिटी ही प्रासपेरिटी है - यह है इस ग्रुप का श्रेष्ठ स्लोगन। समाप्ति के समय सम्पूर्णता की परीक्षा लेंगे। पेपर के क्वेश्चन पहले से ही बता देते हैं। फिर तो पास होना सहज है ना। सम्पूर्णता क्या होती है, उसकी मुख्य चार बातों का पेपर लेंगे। कौन सी चार बातें यह नहीं बतायेंगे। अच्छा -

### सामना करने के लिए कामनाओं का त्याग

रिवाइज: 3-12-70

आज हरेक को अव्यक्त स्थिति का अनुभव करा रहे हैं। हरेक यथाशक्ति अनुभव कर रहे हैं, कहाँ तक हरेक निराकारी और अलंकारी बने हैं वह देख रहे हैं। दोनों ही आवश्यक हैं। अलंकारी कभी भी देह अहंकारी नहीं बन सकेगा। इसलिए सदैव अपने आप को देखो

कि निराकारी और अलंकारी हूँ। यही है मनमनाभव, मध्याजीभव। केवल श्रेष्ठ स्थिति वालों को ही मास्टर सर्वशक्तिमान कहा जाता है। तो मास्टर सर्वशक्तिमान बने हो ना। इस स्थिति में सर्व परिस्थितियों से पार हो जाते हैं। इस स्थिति में स्वभाव अर्थात् सर्व में स्व का भाव अनुभव होता है और अनेक पुराने स्वभाव समाप्त हो जाते हैं। स्वभाव अर्थात् स्व में आत्मा का भाव देखो फिर यह भाव-स्वभाव की बातें समाप्त हो जायेगी। सामना करने की सर्व शक्तियां प्राप्त हो जायेंगी। जब तक कोई सूक्ष्म वा स्थूल कामना है तब तक सामना करने की शक्ति नहीं आ सकती। कामना, सामना करने नहीं देती, इसलिये ब्राह्मणों का अन्तिम सम्पूर्ण स्वरूप क्या गाया जाता है, मालूम है? इस स्थिति का वर्णन है इच्छा मात्रम् अविद्या। अब अपने से पूछो इच्छा मात्रम् अविद्या ऐसी स्थिति हम ब्राह्मणों की बनी है? जब ऐसी स्थिति बनेगी तब जयजयकार और हाहाकार भी होगी। यह है आप सभी का अन्तिम स्वरूप। अपने स्वरूप का साक्षात्कार होता है सदैव अपने सम्पूर्ण और भविष्य स्वरूप ऐसे दिखाई दे जैसे शरीर छोड़ने वाले को बुद्धि में स्पष्ट रहता है कि अभी-अभी यह छोड़ नया शरीर धारण करना है। ऐसे सदैव बुद्धि में यही रहे कि अभी-अभी इस स्वरूप को धारण करना है। जैसे स्थूल चोला बहुत जल्दी धारण कर लेते हो वैसे यह सम्पूर्ण स्वरूप धारण करो। बहुत सुन्दर और श्रेष्ठ वस्त्र सामने देखते फिर पुराने वस्त्र को छोड़ वह नया धारण करना क्या मुश्किल होता है? ऐसे ही जब अपने श्रेष्ठ सम्पूर्ण स्वरूप वा स्थिति को जानते हो, सामने है तो फिर वह सम्पूर्ण श्रेष्ठ स्वरूप धारण करने में देरी क्यों? कोई भी अहंकार है तो वह अलंकारहीन बना देता है। इसलिए निरहंकारी और निराकारी फिर अलंकारी। इस स्थिति में स्थित होना सर्व आत्माओं के कल्याणकारी बनने वाले ही विश्व के राज्य अधिकारी बनते हैं। जब सर्व के कल्याणकारी बनते हो तो क्या जो सर्व का कल्याण करने वाला है वह अपना अकल्याण कर सकता है? सदैव अपने को विजयी रत्न समझ कर हर संकल्प और कर्म करो। मास्टर सर्व शक्तिमान कभी हार नहीं खा सकते। हार खाने वाले को न सिर्फ हार लेकिन धर्मराज की मार भी खानी पड़ती है। क्या हार और मार मंजूर है? जब हार खाते हो, हार के पहले मार सामने देखो। मार से भूत भी भागते हैं। तो मार को सामने रखने से भूत भाग जायेंगे। अब तक हार खाना किन्हीं का काम है? मास्टर सर्वशक्तिमानों का नहीं है इसलिये वही पुरानी बातें, पुरानी चाल अब मास्टर सर्वशक्तिमानों की सूरत पर शोभता नहीं है। इसलिये सम्पूर्ण स्वरूप को अभी-अभी धारण करने की अपने से प्रतिज्ञा करो। प्रयत्न नहीं। प्रयत्न और प्रतिज्ञा में बहुत फर्क है। प्रतिज्ञा एक सेकेण्ड में की जाती है। प्रयत्न में समय लगता है। इसलिये अब प्रयत्न का समय भी गया। अब तो प्रतिज्ञा और सम्पूर्ण रूप की प्रत्यक्षता करनी है। साक्षात् बाप समान साक्षात्कार मूर्त बनना है। ऐसे अपने आपको साक्षात्कार मूर्त समझने से कभी भी हार नहीं खायेंगे। अभी प्रतिज्ञा का समय है न कि हार खाने का। अगर बार-बार हार खाते रहते हैं तो उसका भविष्य भी क्या होगा? ऊंचे-ऊंचे पद तो नहीं पा सकते। बार-बार हार खाने वाले को देवताओं के हार बनाने वाले बनना पड़ेगा। जितना ही बार-बार हार खाते रहेंगे उतना ही बार-बार हार बनाने पड़ेंगे, रत्नजड़ित हार

बनते हैं ना। और फिर द्वापर से भी जब भक्त बनेंगे तो अनेकों मूर्तियों को बार-बार हार पहनाना पड़ेगा, इसलिए हार नहीं खाना। यहाँ कोई हार खाने वाला है क्या। अगर हार नहीं खाते तो बलिहार जाते हैं। अभी बलिहार वा बलि चढ़ने की तैयारी करने वाले हो। समाप्ति में बलि चढ़ना है वा चढ़ चुके हो? जो बलिहार हो गये हैं उन्हीं का पेपर लेंगे। इतने सभी की आज से कोई कम्पलेन नहीं आयेगी। जब हार नहीं खायेगे तो कम्पलेन फिर काहे की। आप लोगों का पेपर वतन में तैयार हो रहा है। ओम् शान्ति।

**वरदान:- फरिश्ता स्वरूप में स्थित रह हर कर्म करने वाले ब्रह्मा बाप समान  
अव्यक्त फरिश्ता भव**

बच्चे कहते हैं हमारा ब्रह्मा बाप से बहुत प्यार है, तो प्यार का अर्थ है समान बनना। जैसे ब्रह्मा बाबा फरिश्ता रूप है ऐसे ब्रह्मा बाप समान फरिश्ता स्वरूप में स्थित होकर हर कर्म करो। फरिश्ता माना लाइट का आकार। तो लाइट के आकार में रहकर कर्म करो, लाइट का शरीर देखो। इस फरिश्ते स्वरूप में कोई भी विघ्न प्रभाव नहीं डाल सकता। आपके संकल्प, वृत्ति, दृष्टि सब डबल लाइट हो जायेंगे।

**स्लोगन:-**

जिनका सोचना, बोलना और करना समान है वही सर्वोत्तम पुरुषार्थी है।

### सूचना

आप सबको ज्ञात हो कि प्यारे बापदादा के अति स्नेही अथक सेवाधारी मधुबन निवासी 'पेरूमल' भाई जो अभी विशाल भवन में रात्रि पहरा देते थे। शुरु में जब 'सुखधाम' की बिल्डिंग बन रही थी। तब आपने अपनी कला द्वारा बिना बारुद वा सुरंग के पत्थर तोड़ने की बहुत अथक सेवायें की। बाद में वे समर्पित रूप से आप यज्ञ में सेवायें देते रहे। वैसे आप लौकिक में कर्नाटक के टांगन शहर से आये थे। कुछ समय से तबियत ठीक नहीं थी। 3 दिन पहले सफल आपरेशन हुआ लेकिन अचानक 26 अप्रैल 2009 को वह आत्मा अपना पुराना शरीर छोड़ बापदादा की गोद में चली गई। 27 तारीख को उन्हें मधुबन के चारों धामों की यात्रा कराते स्नेह सुमन अर्पित करते अन्तिम संस्कार किया गया।